

**Report**  
**Geographical Survey**  
**of Parasrampura**

**IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE AWARD OF MASTERS  
DEGREE IN GEOGRAPHY**



**DEPARTMENT OF GEOGRAPHY**  
**SETH G.B. PODAR COLLEGE**  
**NAWALGARH (RAJASTHAN)**



**PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA SHEKHAWATI UNIVERSITY, SIKAR**

**SUBMITTED BY**

**RAJKUMAR**

**M.A./M.Sc. PREVIOUS**

**SESSION: 2021-22**



**DEPARTMENT OF GEOGRAPHY**  
**SETH G.B. PODAR COLLEGE, NAWALGARH**

**CERTIFICATE OF COMPLETION**  
**GEOGRAPHICAL SURVEY**

**In Partial Fulfillment of The Requirement For The Award of  
Masters Degree In Geography (M.A/M.Sc.)**

**Presented To**

**Rajkumar**

**For Completing Geographical Survey of**

**Parasrampura**

**Prof. Shantilal Joshi**  
**Head of Department**

**Dr. Satyendra Singh**  
**Principal**





सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोदार महाविद्यालय नवलगढ़  
सत्र 2021-22  
पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर



भौगोलिक क्षेत्रीय अध्ययन रिपोर्ट

निर्देशक  
सुनिल कुमार  
भूगोल विभागाध्यक्ष

सर्वेक्षणकर्ता  
नाम- राजकुमार  
एम.ए./एम.एस.सी. प्रिवियस(भूगोल)



विषय- सूची

1.	परिचय
2.	भौगोलिक स्थिति
3.	भौतिक स्वरूप
3.	अपवाह तंत्र
4.	जलवायु
5.	सिंचाई के साधन
6.	मिट्टी
7.	प्राकृतिक वनस्पति
8.	खनिज सम्पदा
9.	जनसंख्या
10.	अधिवास
11.	स्वास्थ्य सुविधाएं
12.	शिक्षा का स्तर
13.	कृषि
14.	प्रमुख मेले व त्यौहार
15.	प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थल
16.	उद्योग धन्धे
17.	पशु सम्पदा
18.	संचार व मनोरंजन के साधन
19.	परिवहन के साधन
20.	ग्रामिण विकास की नवीन योजनाएं
21.	गाँव की समस्याएं
22.	गाँव के विकास हेतु सुझाव
23.	निष्कर्ष

kharya ka gbalaji

क्लिनिक

खर्या का  
खलाजी

विजय कुमार  
ड्राइवर

Parasrampu  
Sub Post Office

BHOJAKA Home

Raja Hindi

परसरामपुरा उप  
पोस्ट ऑफिस

Parashar Enterprises  
(Digital Common...)

Chara ka bas  
चारा का बस

पाराशर  
एंटरप्राइजेज...

Work

500 ft

200 m

Google

कृषि:-

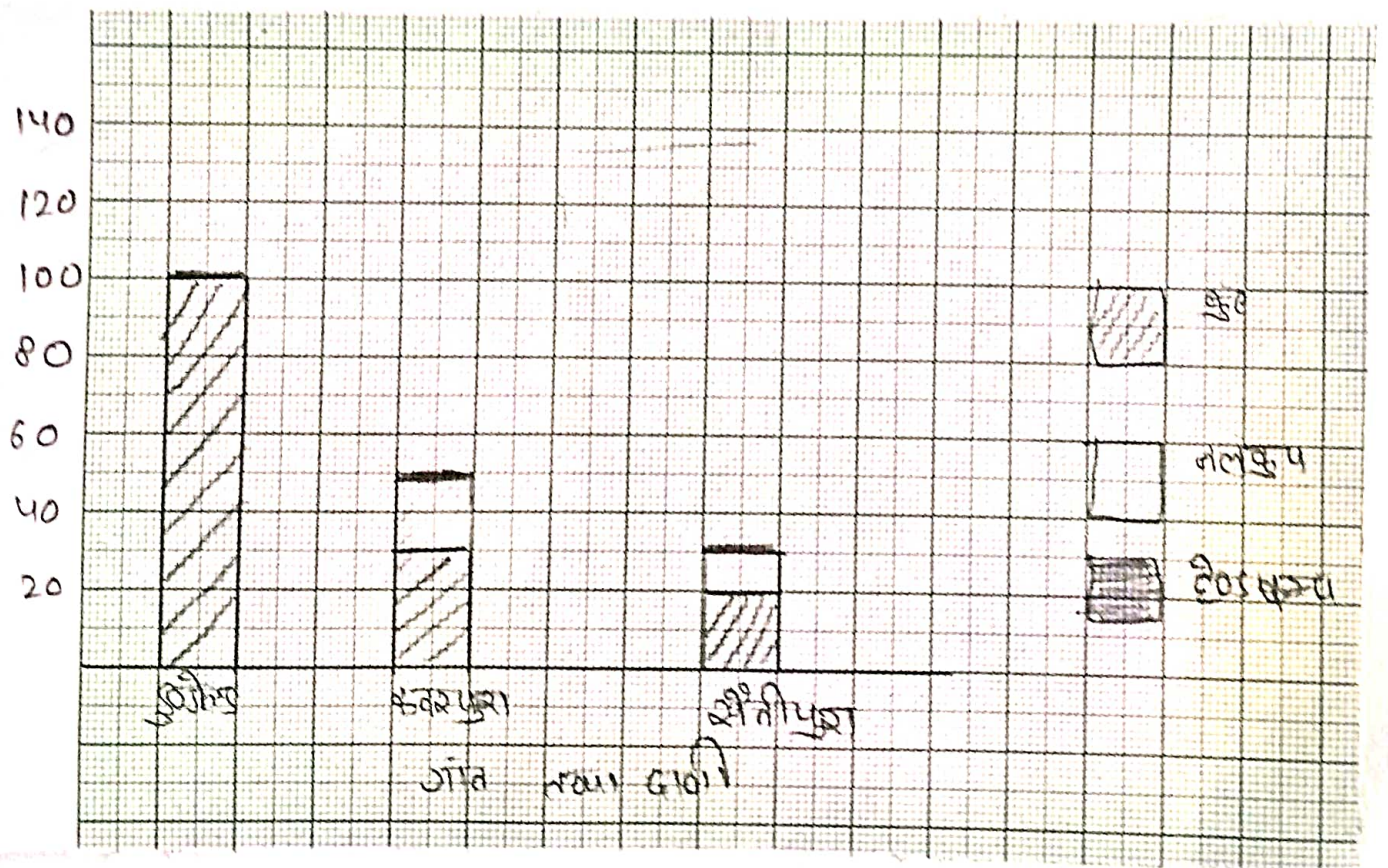
अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से रबी खरीफ की फसलें उत्पन्न की जाती हैं तथा गांव के आसपास छोटे पैमाने पर जायदा की फसलें भी विकसित की जा रही हैं। रबी की फसल के अन्तर्गत गेहूँ, जौ, सरसों, मैथी, तारामीरा तथा खरीफ की फसल के अन्तर्गत वाजरा, चोला, मुंग व गवार एवं ज्वार तथा जायदा की फसल के अन्तर्गत तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, टिन्डा, गिन्डी इत्यादि विकसित किये जाते हैं वर्तमान समय में इन फसलों के उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकी तथा पद्धतियों पर आधारित फसलें उगायी जाती हैं रबी की फसल अक्टूबर नवम्बर में बोई जाती है तथा सिंचाई का कार्य कुएँ, नलकुप के द्वारा किया जाता है। खरीफ की फसल जुलाई, अगस्त में बोई जाती है तथा अक्टूबर में काट ली जाती है इस की फसल की पैदावार वर्षा पर निर्भर है परन्तु वर्षा समय पर ना होने पर तथा वर्षा जाती है जायदा की फसल को पानी की आपूर्ति सिंचाई के साधनों द्वारा की जाती है जायदा की फसल की बुआई रबी की फसल के पश्चात की जाती है ये फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित होने के कारण छोटे पैमाने पर विकसित की जाती है। उपयोग तथा अन्य रसायनों का उपयोग किया जा रहा है। बढ़ती हुई आवादी के दबाव से मृदा अनुपजाऊ खारीकरण तथा कई अन्य समस्याओं से ग्रसित होती जा रही है इस समस्या के समाधान के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर मिट्टी की बार-बार जांच व परिक्षण करवाया जाता है कृषकों को मिट्टी की उर्वरता बनायी रखने के लिए नई-नई तकनीकी व पद्धतियों से अवगत कराया जाता है।



तालिका संख्या-2

क्र.सं.	गांव	कुएँ	नलकुप	हैण्डपम्प	कुलयोग
1	चारा का बास	75	26	7	104
2	घोलाखेड़ा	67	16	5	56
3	देवगांव	53	11	4	34
	कुल	210	53	16	194

उपरोक्त आंकड़ों की सहायता से भिन्नित रेखाचित्र द्वारा इनका निरूपण किया जा सकता है:-

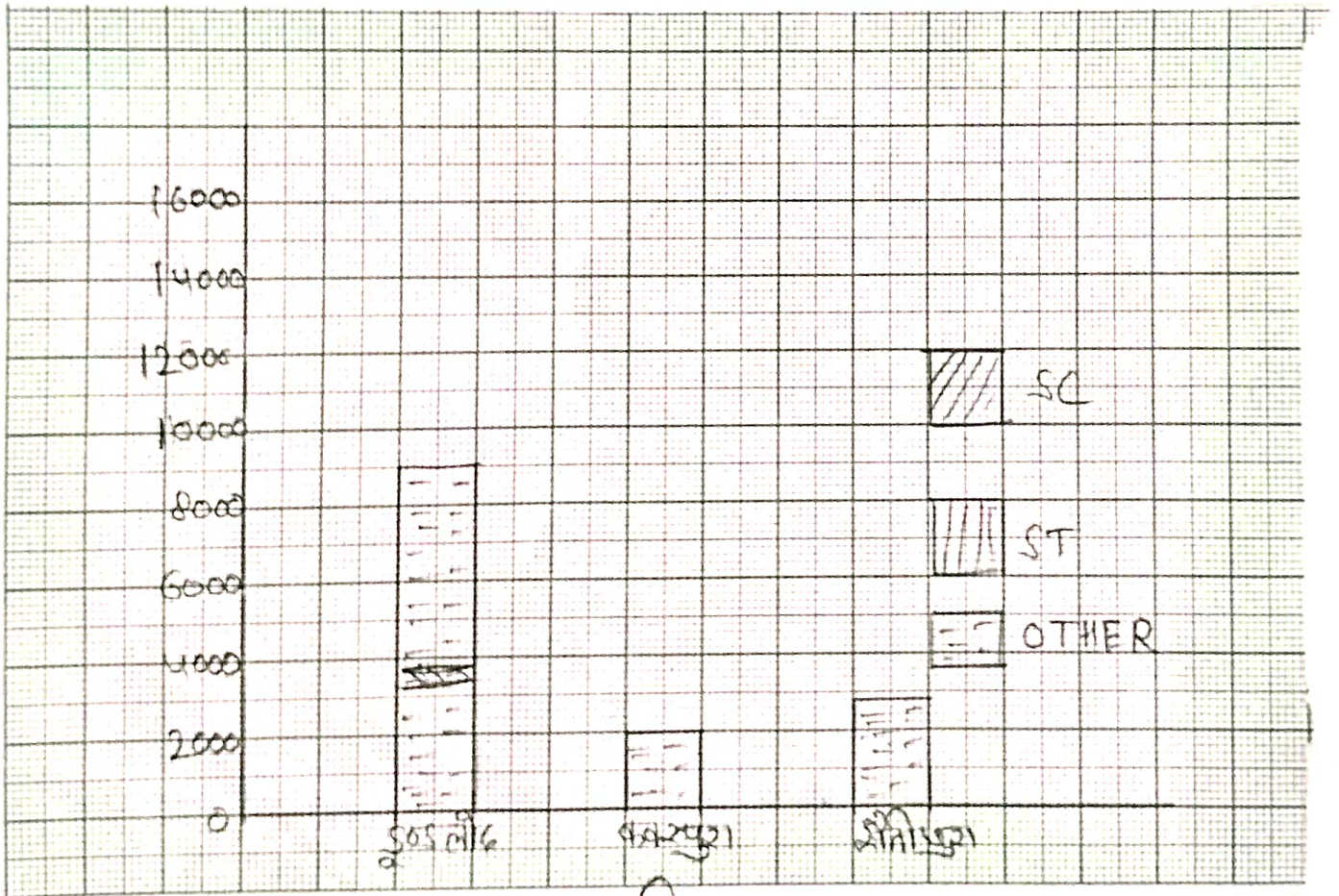


जनसंख्या:-

परसरामपुरा गाँव में संघन जनसंख्या का जमाव पाया जाता है आबादी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण अधिक तथा बाहरी भागों में (खेतों में) जनसंख्या का वितरण कम है यहां कि कुल जनसंख्या 7917 है जिनमें से एस.सी के लोग 2875 एस.टी के 2082 तथा अन्य लोगों की संख्या 2960 है। इस गाँव में पाई जाने वाली जनसंख्या का वितरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है:-

तालिका संख्या 3

क्र सं.	गाँव का नाम	S.C	s.t	अन्य लोग	कुल जनसंख्या
1	चारा का बास	1050	720	1200	2970
2	धोलाखेडा	970	852	1020	2842
3	देवगाँव	855	510	740	2105
	योग	2875	2082	2960	7917

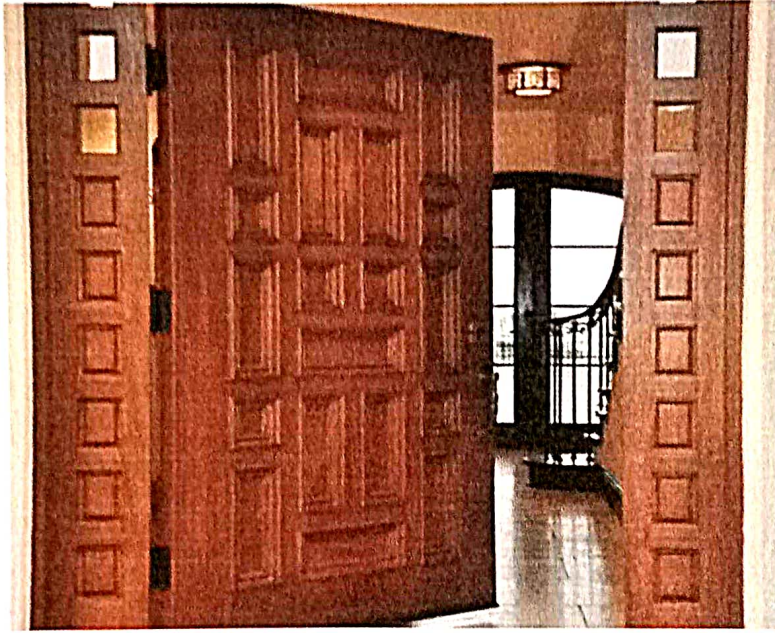


जाव तथा जमी



अधिवास:-

परसरामपुरा गांव में अधिवासों का प्रगिरूप चौक पट्टीनुमा है। इसके साथ-साथ कुछ घर तीरनुमा प्रतिरूप का गिश्तित प्रतिरूप में भी बसे हुए हैं। परसरामपुरा स्टैंड से देवगाव गढ़ तक सीधा मार्ग है तथा इस मार्ग के दोनों किनारों पर घर बने हुए हैं तथा गरिजद, परसरामपुरा हवेलियों तथा ग्राम पंचायत के चारों ओर वृताकार रूप में घर बने हुए हैं अधिकांश घर सीमेन्ट कंकरिट तथा लोहे के मिश्रण से निर्मित पक्के अधिवास हैं परन्तु कुछ संख्या में गरिबी रेखा से निचे जीवने यापन करने वाले लोगों की संख्या 115 है जिनके घर कच्ची ईंटों से निर्मित है इस गांव में 1 गंजिल से लेकर बहू गंजिल तक इमारते बनी हुई है। यहां की हवेलियां, गढ़, छतरियां तथा मन्दिर पुरानी तकनीकों विधियों पर आधारित है जिनकी चित्र शैली ओर विधि शैली अद्भूत है जलवायू का घरों की बनावट तथा प्रका में विशेष ध्यान रखा गया है। गांव में 20 प्रतिशत पक्के मकान 15 प्रतिशत अर्द्ध पक्के मकान तथा 5 प्रतिशत कच्चे अधिवास निर्मित है। तथा डुण्डलोद गांव में कोई भी अधिवास योग्य नहीं स्वीकृत हुआ है यह स्थिति वर्ष 2015-16 में फरवरी माह तक की है।



स्वास्थ्य सुविधाएं:-

परसरामपुरा गाँव में सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर कई स्वास्थ्य केन्द्र बने हुए हैं। सरकारी हॉस्पिटल में प्रतिदिन लगभग 70 मरीजों का इलाज डॉ. भास्कर वी. रावल द्वारा किया जाता है जबकि प्राथमिक उपस्वास्थ्य केन्द्र में डॉ. निर्मला देवी द्वारा लगभग 50 मरीजों का इलाज व दवाई वितरित की जाती है। यहां पर टीकाकरण की भी व्यवस्था है। परसरामपुरा गाँव में एक प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र, एक गोयनका निजी स्वास्थ्य केन्द्र स्थित है जहां पर प्रतिदिन मौसमी विमारियों का इलाज के लिए आस-पास के लोग आते रहते हैं इनके द्वारा टि.वी. टाइफाइड व फेफड़ों से सम्बन्धित रोगों का निदान किया जाता है।

पशुओं के लिए भी एक पशु चिकित्सा केन्द्र स्थापित है गाय, भैंस, ऊंट, बकरी, भेड़ का इलाज इस प्रकार किया जाता है। इस केन्द्र में टीकाकरण कृत्रिम गर्भादान तथा मौसमी विमारियों की रोकथाम हेतु इलाज किया जाता है। गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त सुविधाएं हैं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 तथा उपस्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 एवं होमियोपैथिक चिकित्सालय की संख्या 1 है और इसी प्रकार पशु चिकित्सालय 1 है।



प्राकृतिक वनस्पति:-

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति का विवरण बहुत ही कम है तथा वनस्पति की सघनता कम होने के साथ-साथ यहां पर ऊष्ण कटिबंधीय गुण वाली वनस्पति पाई जाती है। चूंकि बेशी अर्द्ध शुष्क जलवायु के अन्तर्गत स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क या अर्द्ध मरुस्थलीय वनस्पति पाई जाती है प्राकृतिक वनस्पति के विकास में जलवायु तथा मृदा का महत्वपूर्ण योगदान होता है दरा क्षेत्र के अन्तर्गत खेजड़ी बबूल कंटिली झाड़ियां नीम, सीसम, बरगद, शहतूत, नींबू, पपीता, अमरुद, इत्यादि फलों वाले पौधे भी उपलब्ध है। वर्तमान समय में यहां पर बागवानी पौधों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है परिणामतः घरों तथा खेतों में बड़े पैमाने पर फलदार पौधे विकसित हो रहे हैं। यहां पतझड़ वृक्ष भी उपलब्ध है जो ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही अपने पते गिरा देते हैं चूंकि अध्ययन क्षेत्र में चारागाह का कोई क्षेत्र चिन्हित नहीं किया गया है।



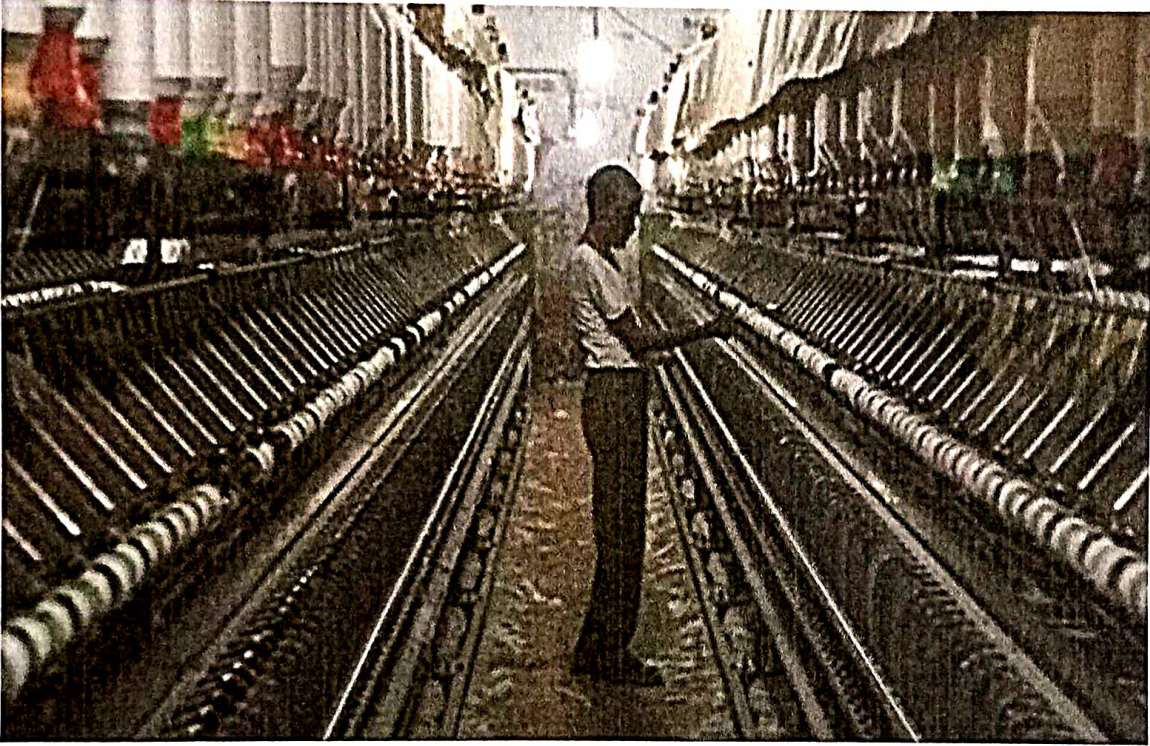
शिक्षा का स्तर:-

परसरामपुरा गाँव में शिक्षा की दृष्टि से अच्छा वातावरण बना हुआ है प्राचिन कालन से ही यहां पर शैक्षणिक दृष्टि से राजकीय सीनीयर सैकण्डरी स्कूल संचालित थी। इसका निर्माण परसरामपुरा गाँव के प्रसिद्ध सेठ रामचन्द्र राजकीय द्वारा करवाया गया था वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है यहां सी.बी.एस.सी से मान्यता प्राप्त 4 स्कूलों तथा दो डिग्री कॉलेज एक पोलॉटेकनिकल कॉलेज, 9 मीडिल स्कूलों, दो आई.टी.आई कॉलेज. 2 वी.एड कॉलेज. 12 प्राईमरी स्कूल निजी क्षेत्र तथा सरकार द्वारा संचालित है इसके अतिरिक्त शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख इंजिनियरिंग कॉलेज भी शामिल है यह क्षेत्र डिग्री, शिक्षा तथा प्रशिक्षण पादयक्रम उपलब्ध कराने के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा में भी अग्रणी बना हुआ है इसी कारण क्षेत्र में आस-पास लोग आकर अध्ययन करते है तथा अध्ययनरत विधार्थियों के लिए उत्तम गुणों के छात्रावासों की व्यवस्था बनी हुई है।



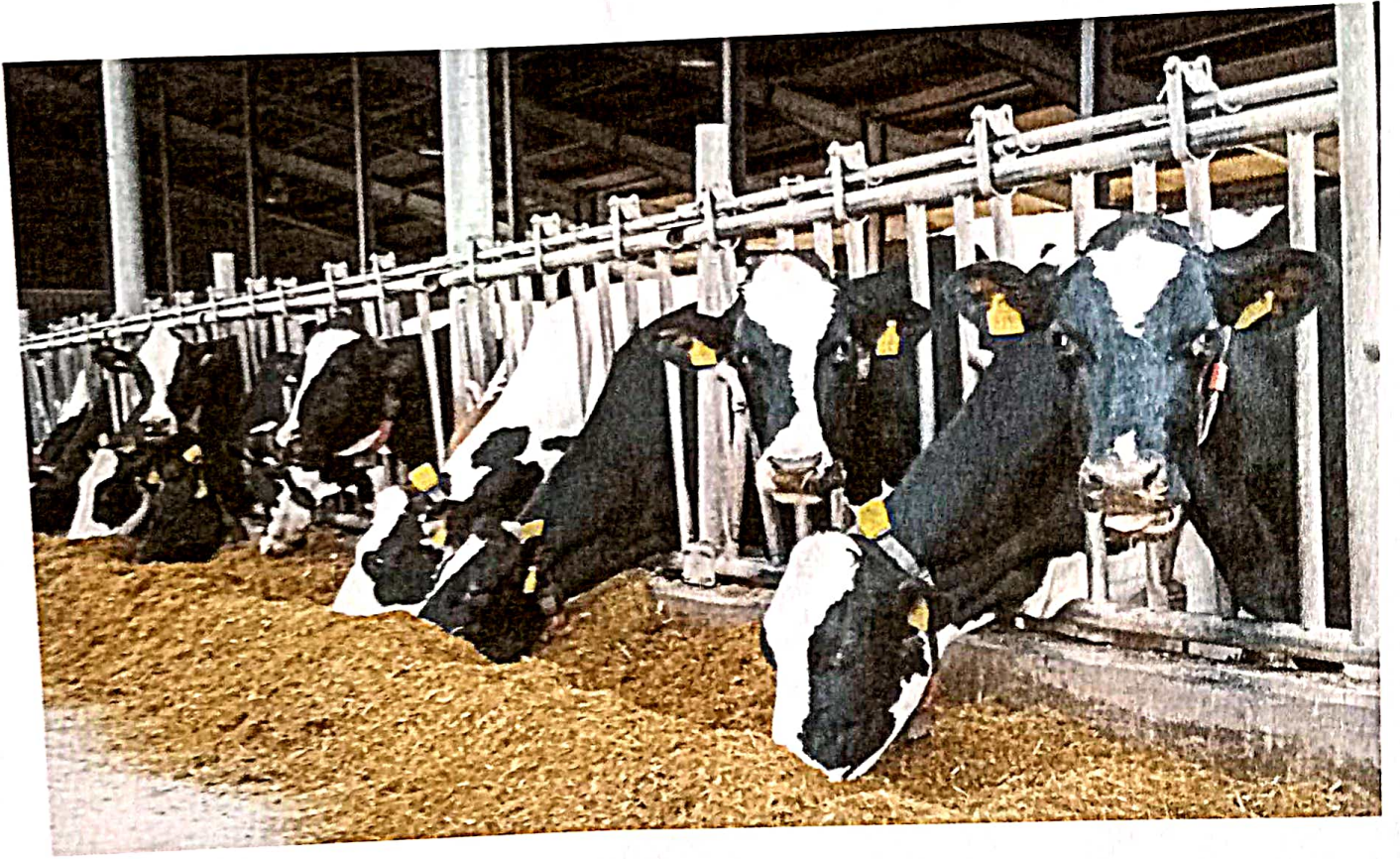
उधोग धन्धे:-

परसरामपुरा गाँव के वार्ड नम्बर 3 में सर्वेक्षण के आधार पर कोई भी बड़ा उधोग धन्धा नहीं था। यह मुस्लिम मोहल्ला होने के कारण छोटी-छोटी चुड़ियों की दुकाने तथा चुड़ियों का कार्य घरों में किया जाता है इन चुड़ियों की कीमत 100 से 5000 रुपये तक है चुड़ियों लाख द्वारा निर्मित होती है तथा इन पर विभिन्न प्रकार की डिजाइन तथा तरासकर आधुनिक रूप दे दिया जाता है जो सुन्दरता की दृष्टि से अच्छी लगती है इसके साथ-साथ इस क्षेत्र में दवाईयों की दुकानें स्थित है। गाँव में एक ऑयल मिल भी स्थित है वह भी वर्तमान समय में बंद की स्थिति में है।



पशु सम्पदा:-

परसरामपुरा गाँव पशु सम्पदा की दृष्टि से शेखावाटी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है यहाँ पर उत्तम नस्ल की गायें, भेड़, बकरी, ऊट, गधे पाये जाते हैं। देवगाँव का अश्व प्रजनन केन्द्र तथा कामधेनु गौशाला अपना विचित्र स्थान लिये हुए है कामधेनु गौशाला की स्थापना वर्ष 2008-09 में बुद्धगिरी ट्रस्ट फतेहपुर द्वारा किया जाता है। यह गौशाला 40 बिघा क्षेत्र में फैली हुई है। इस गौशाला में एक ट्यूबवेल व नलकूप बना हुआ है जो गायों को पानी तथा चारा

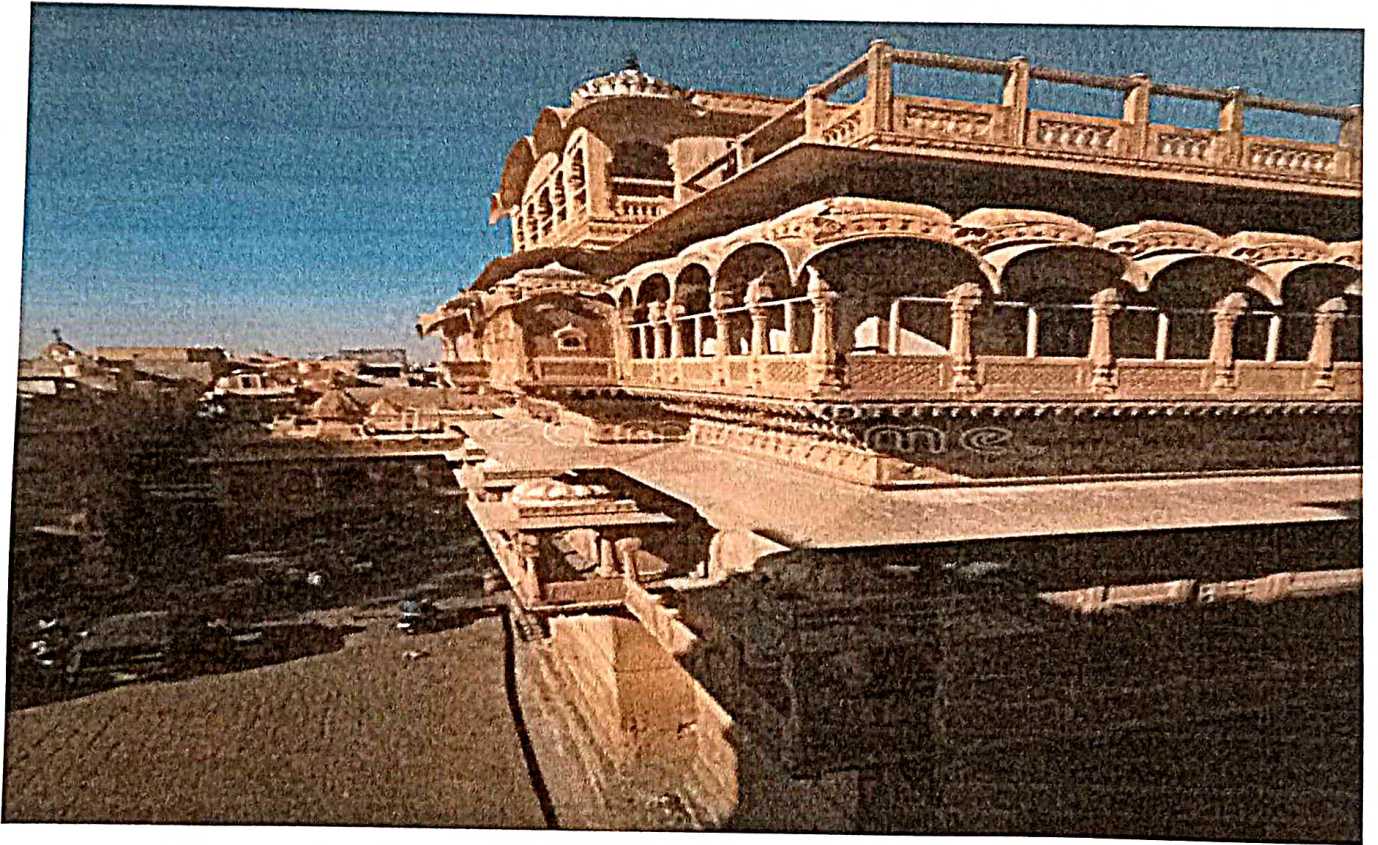


प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थल:-

परसरामपुरा गाँव पर्यटन की दृष्टि से शेखावाटी में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस गाँव में पर्यटन एवं ऐतिहासिक स्मारकों की दृष्टि से विभिन्न हवेलियों तथा परसरामपुरा गाँव को देखने के लिए विदेशों से बड़ी संख्या में पर्यटक आते रहते हैं परसरामपुरा गाँव का केन्द्र है जिनके चारों ओर नहर बनी हुई है तथा यह लगभग 8 हैक्टर में फैला हुआ है इस गढ़ में विशेष तौर से दिवान खास, सूर्य घड़ी तथा दु-छता महत्वपूर्ण है। दिवाना खास में राजा तथा रानीयां निवास करती थी, तथा दु-छता में अनेक भित्ति चित्र तथा रानीयों के सजावट की सामग्री एकत्र है। सूर्य घड़ी अब भी सामान्य घड़ियों की भांती समय का सही निर्धारण कर पाती है। इस गढ़ में कई फिल्मों तथा सीरीयल बनाये गये हैं। राजा का बाजा, बिनणी वोट देने वाली तथा विदाई इत्यादि फिल्मों की शूटिंग की जा सकी है तथा बकरा सीरीयल भी यही से फिल्माया गया है। खनिज सम्पदा:-

वर्तमान समय में परसरामपुरा गाँव में किसी प्रकार के खनिज का विशेष तौर पर खनन नहीं किया जा रहा है। नई खोजों तथा शोधकार्यों के आधार पर इस क्षेत्र में खनिज उपलब्ध होने की सम्भावना है।

गोयनका हवेली का म्यूजियम प्राचिन परम्पराओं तथा वेशभूषा एवं अन्य कार्यों के लिए विचित्र शैली में बना हुआ है यहां श्याम मंदिर, ठाकुर जी का मंदिर, संतोषि माता का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर तथा पोलो ग्राउण्ड इत्यादि महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल तथा धार्मिक तीर्थ स्थल है। इन सामारिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए हजारों विदेशी सैलानी आते रहते हैं।



संचार व मनोरंजन साधन:-

किसी क्षेत्र के विकास का परिचायक संचार एवं मनोरंजन के साधनों पर निर्भर करता है। चूंकि परसरामपुरा गाँव में 6 मोबाइल टावर जो विभिन्न कंपनियों से संबंधित है एक पोस्ट ऑफिस तथा 85 प्रतिशत लोगों के घरों में टेलिविजन गति के संचार के साधनों में मोबाइल सुविधा उपलब्ध है गाँव के मध्य में मुख्य पोस्ट ऑफिस स्थित है जिसके अन्तर्गत रजिस्ट्री, स्पीड पोस्ट, सी.टी.सी. तथा मनीआर्डर की सुविधा उपलब्ध है।





## व्यापार व वाणिज्य:-

गांव की अधिकांश द्वितीयक तृतीयक व्यवसायों में संलग्न है। इस गांव में कृषि पशु पालन आदि आधुनिक तकनीकी पर आधारित है। इस क्षेत्र के ग्रामवासी भारत के बड़े-बड़े नगरों में औद्योगिक कार्यों से जुड़े हुए हैं यहां के सेठ, साहुकारों ने गांव का विकास करके गांव में औद्योगिक भू दृश्य विकसित किया है। इस गांव में बैंकिंग संचार तथा अन्य आर्थिक कार्यों में लोगों की अच्छी रुची बनी हुई है। यहां के कृषि उत्पादों में जैविक उत्पाद पर विशेष ध्यान दिया गया है तथा पशुपालन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है।

## परिवहन के साधन:-

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान है इनके द्वारा आवश्यक माल को मांगने, अतिरिक्त उत्पादन को बाहर भेजने एवं अपने क्षेत्र में नवाचारों के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। चूंकि बेरी गांव सड़क व रेल परिवहन से जुड़ा हुआ है।

जयपुर-लोहारू राज्य राजमार्ग गांव की सीमा को दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर स्पर्श करता हुआ गुजरात है जो गांव को अन्य नगरों, कस्बों, जिला मुख्यालयों तथा राजधानी से जोड़ता है। गांव के अन्दर 4 किलोमीटर पक्की सड़क(डामर युक्त) 3 किलोमीटर सीमेंट सड़क तथा 10 किलोमीटर कच्ची सड़क(ग्रेवल रोड) है जो गांव की गलियों को गांव के चौक से तथा चौक कसे अन्य पड़ोसी गांवों नगरों, जिलों तथा राजधानियों से जोड़ने का कार्य करती है।

यातायात के साधनों में यहां बस, ट्रक, जीप, कार, मोटर साईकिल, साईकिल, लॉन्गगाड़ी(लगभग 45), बेलगाड़ी(लगभग 13), गधागाड़ी(लगभग 20) तथा घोड़ा गाड़ी(लगभग 5) आदि नये व पुराने तथा तिर्र व मंदगती वाले यातायात के साधन विकसित हैं।



- गांव में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा प्रदूषण के अन्य कारको गांव का प्राकृतिक सौन्दर्य व वातावरण पर विपरित प्रभाव पड़ने है।
- गांव में चारागाहों के अभाव के कारण मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है।
- वनों के अत्यधिक दोहन के कारण अध्ययन क्षेत्र की जलवायु तथा पशुओं के लिए चारागाहों पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है।
- अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण गांव में गरीबी का स्तर बढ़ने लगा है बी.पी.एल तथा ए.पी.एल परिवारों की संख्या में वृद्धि होने लगी है। गांव में शराब की दुकाने, तम्बाकू व गुटखों की दुकाने जगह-जगह पर बनी हुई है। जिससे ग्रामवासियों को धूम्रपान की आदत पड़ गयी है।
- गांव में नालियों की सफाई समय-समय पर नहीं होने के कारण गन्दगी फैलती रहती है जिसके कारण मौसमी विमारियों का प्रकोप बना रहता है।
- वेरी गांव में पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है जिसके कारण ग्रामवासी देशी विदेशी संस्कृति को अपनाने लगे है। फलतः भारतीय संस्कृति एवं परम्परा अपना अस्तित्व खो रही है।

परिचय:-

परसरामपुरा गाँव की स्थापना ठाकुर नवल सिंह बहादुर ने 1737 ई. में की थी। मारवाड़ी समुदाय के कई महान व्यापारिक परिवार बेरी मूल के हैं। इनकी पर्यटन एवं सांस्कृतिक कार्यों में बड़ी रूची थी तथा इनके चार पुत्र सात रानियाँ थी नवलगढ़ से झुंझुनू मार्ग पर 8 किलोमीटर दूर उत्तर में स्थित है। आज बेरी की दशा व आकृति में निरन्तर परिवर्तन देखने को मिल रहा है। सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक दृष्टि से उभर रहा है। जो शेखावाटी में अपना नाम कमा पा रहा है। धीरे-धीरे बेरी के समीप होने से इसके विकसीत होने पर बल मिल रहा है। परसरामपुरा गाँव में जनसंख्या का निरन्तर विस्तार हो रहा है क्योंकि यहां सांस्कृतिक धरोहर पायी जाती है। जो पर्यटन में बढ़ोतरी हो रही है। जो आर्थिक बढ़ोतरी का स्वस्थ बना रहा है।

नवलगढ़ के पूर्व में बलरिया गांव तथा पश्चिम में बीदसर, कल्याणपुर तथा उत्तर पश्चिम में मिर्जवास और दक्षिण में सीकर स्थित है। डुण्डलोद गांव नवलगढ़ तहसील की प्रमुख ग्राम पंचायत हैं। नवलगढ़ गांव राजस्थान का पहला गांव था, जो इंटरनेट की सेवाओं से जुड़ा था तथा सर्वप्रथम झुंझुनू जिले के इसी गांव में यूको बैंक की स्थापना हुयी थी इस गांव में भारत का प्रसिद्ध मारवाड़ी घोड़े या मालानी नस्ल के घोड़े का प्रजनन केन्द्र स्थित है। तथा यहां पर राजस्थान का गदर्भ केन्द्र स्थित है।

भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार-

परसरामपुरा का अक्षांशीय विस्तार 27 डिग्री 50 मिनट उत्तरी अक्षांश तथा 75 डिग्री 15 मिनट उत्तरी अक्षांश से 75 डिग्री 20 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। नवलगढ़ के उत्तर तथा पश्चिम भाग में मुख्य बाजार स्थित है। इस गांव की बसावट आयताकार रूप में बसी हुई है। राज्य राजमार्ग 1.5 किलोमीटर अन्दर की ओर स्थित है। यह मार्ग जयपुर से सीकर से होता हुआ, झुंझुनू से पिलानी की ओर जाता है।

भौतिक स्वरूप-

परसरामपुरा जलवायु की दृष्टि से कॉपेन महोदय तथा थार्नवेट महोदय के अनुसार विभाजित जलवायु वर्गीकरण के अनुसार अर्द्ध मरुस्थलीय क्षेत्र के अंतर्गत आता है। चूंकि इस गांव का अधिकांश भाग मैदानी रूप में फैला हुआ है तथा इस गांव के उत्तर में पश्चिम से उत्तर दिशा की ओर बालुका स्तूप स्थित है। चूंकि नवलगढ़ के सम्पर्ण क्षेत्र का 30 भाग मरुस्थलीय टिलों तथा समतल मैदानी भाग है। इस गांव में कोई भी पर्वतीय भु-भाग स्थित नहीं है।

अपवाह तंत्र—

परसरामपुरा आन्तरिक अपवाह तंत्र के अन्तर्गत आता है। इसलिए यहा पर नदियों का अभाव बना हुआ है। वर्ष 1965 में खण्डेला की पहाड़ियों से चिराणा नदी का पानी इस गांव में प्रवाहित होती हुई उत्तर पश्चिम में निकलकर राजपुरा गांव के निकट पहुँच गया था इसके पश्चात यहां पर कोई भी नदी नहीं आयी है। चूंकि निरंतर वर्षा का औसत कम होने के कारण चिराणा नदी इस गांव में पहुंचने से पहले ही विलुप्त हो जाती है छपनया अकाल में कान्तली नदी में तेज बहाव के कारण इस नदी का जल इस गांव में तेज गति से पहुंचा था जिसके कारण झुग्गी-झोपड़ियों व आवासों को बड़ा नुकसान पहुंचा था और इस नदी का पानी आगे चलकर कटेह बीहड़ तक पहुँच गया था, अपवाह तंत्र की दृष्टि से इस गांव का उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर पूर्वी भाग उच्चावच की दृष्टि से उच्च है। तथा दक्षिणी पूर्वी एवं दक्षिणी-पश्चिमी भाग निचाई पर स्थित है, जिसके कारण वरसात का पानी तथा सीवरेज का पानी इस निचले भू-भागों में प्रवाहित होकर इकट्ठा हो रहा है।

जलवायु:-

जलवायु के अन्तर्गत तापमान, वर्षा, आर्द्रता तथा पवनों की दिशाओं का विश्लेषण किया जाता है। अधिकतर क्षेत्र की जलवायु बड़ी विषमता लिए हुए है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत वार्षिक वर्षा का औसत 50 सेन्टीमीटर है। परन्तु वर्षा के यह औसत निश्चित नहीं है। कभी-कभी वर्षा की मात्रा औसत से न्यूनतम हो जाती है। इस क्षेत्र में अधिकांश वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी अरबसागरीय मानसुनी पवनों के द्वारा सर्वप्रथम होती है जब अरबसागरीय मानसुन अधिक सक्रिय होता है तो वर्षा अधिक मात्रा में होती है, ता वर्षा का औसत घट जाता है। परन्तु यहा पर शीतऋतु में वर्षा उत्तरी पूर्वी शीतकालीन मानसुनी हवाओं तथा भूमध्यसागरीय विक्षोभो द्वारा होती है, परन्तु मानसुन द्वारा वर्षा की मात्रा कम हो जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में मावठ कहते हैं, मावठ रबी की फसल के लिए बड़ी लाभदायक मानी जाती है मावठ की फसल का सर्वाधिक लाभ गेहूँ की फसल को होता है।

परसरामपुरा राजस्थान के अर्द्धशुष्क जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है गर्मियों का औसत तापमान 49 डिग्री सेन्टीग्रेड जुन तथा मई के महीने में अंकित किया जाता है। चूंकि यहा पर ग्रीष्मकाल में उत्तर-पश्चिम से गर्म हवाएं चला सकती है जिन्हें स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है। इन्हें ताप लहरी हवाएं भी कहा जाता है। जिन्हें स्थानीय भाषा में लू के नाम से पुकारा जाता है। लू के कारण कभी-कभी लोगों कि मृत्यु तक हो जाती है। ग्रीष्मऋतु का आगमन मार्च के बाद यहा का तापमान निरन्तर बढ़ने लगता है तथा हवाएं उत्तर-पश्चिमी से चलना प्रारम्भ हो जाती है और इन हवाओं की गति मई-जून में अत्यधिक रहती है। मई-जून में हवाओं का औसत वेग रहता है। ताप लहरी हवाओं के साथ-साथ धूल भरी हवाएं चलने लगती है। राजस्थान में धूलभरी हवाओं की सर्वाधिक संख्या गंगानगर में तथा सबसे कम झालावाड़ में तथा इस क्षेत्र में अक्टुम्बर तथा नवम्बर में हवाओं की गति मंद होती है तथा ये दोनों मैप शान्त दिनों वाले कहलाते है, नवम्बर के बाद में गुलाबी शर्दी का आगमन हो जाता है आगे चलकर दिसम्बर जनवरी में तापमान 0 डिग्री सेन्टीग्रेड हो जाता है तथा डुण्डलोद गांव का इस वर्षा का जनवरी महिने में 10 या 11 दिनांक को न्यूनतम तापमान 0.5 सेन्टीग्रेड अंकित किया गया, कभी-कभी तापमान के 0 डिग्री से कम हो जाने पर बर्फ जम जाती है।

अपवाह तंत्र—

परसरामपुरा आन्तरिक अपवाह तंत्र के अन्तर्गत आता है। इसलिए यहा पर नदियों का अभाव बना हुआ है। वर्ष 1965 में खण्डेला की पहाड़ियों से चिराणा नदी का पानी इस गांव में प्रवाहित होती हुई उत्तर पश्चिम में निकलकर राजपुरा गांव के निकट पहुँच गया था इसके पश्चात यहां पर कोई भी नदी नहीं आयी है। चूंकि निरंतर वर्षा का औसत कम होने के कारण चिराणा नदी इस गांव में पहुंचने से पहले ही विलुप्त हो जाती है छपनया अकाल में कान्तली नदी में तेज बहाव के कारण इस नदी का जल इस गांव में तेज गति से पहुंचा था जिसके कारण झुग्गी-झोपड़ियों व आवासों को बड़ा नुकसान पहुंचा था और इस नदी का पानी आगे चलकर कटेह बीहड़ तक पहुँच गया था, अपवाह तंत्र की दृष्टि से इस गांव का उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर पूर्वी भाग उच्चावच की दृष्टि से उच्च है। तथा दक्षिणी पूर्वी एवं दक्षिणी-पश्चिमी भाग निचाई पर स्थित है, जिसके कारण वरसात का पानी तथा सीवरेज का पानी इस निचले भू-भागों में प्रवाहित होकर इकट्ठा हो रहा है।

जलवायु:-

जलवायु के अन्तर्गत तापमान, वर्षा, आर्द्रता तथा पवनों की दिशाओं का विश्लेषण किया जाता है। अधिकतर क्षेत्र की जलवायु बड़ी विषमता लिए हुए है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत वार्षिक वर्षा का औसत 50 सेन्टीमीटर है। परन्तु वर्षा के यह औसत निश्चित नहीं है। कभी-कभी वर्षा की मात्रा औसत से न्यूनतम हो जाती है। इस क्षेत्र में अधिकांश वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी अरबसागरीय मानसुनी पवनों के द्वारा सर्वप्रथम होती है जब अरबसागरीय मानसुन अधिक सक्रिय होता है तो वर्षा अधिक मात्रा में होती है, ता वर्षा का औसत घट जाता है। परन्तु यहा पर शीतऋतु में वर्षा उत्तरी पूर्वी शीतकालीन मानसुनी हवाओं तथा भूमध्यसागरीय विक्षोभो द्वारा होती है, परन्तु मानसुन द्वारा वर्षा की मात्रा कम हो जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में मावठ कहते हैं, मावठ रबी की फसल के लिए बड़ी लाभदायक मानी जाती है मावठ की फसल का सर्वाधिक लाभ गेहूँ की फसल को होता है।

परसरामपुरा राजस्थान के अर्द्धशुष्क जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है गर्मियों का औसत तापमान 49 डिग्री सेन्टीग्रेड जुन तथा मई के महीने में अंकित किया जाता है। चूंकि यहा पर ग्रीष्मकाल में उत्तर-पश्चिम से गर्म हवाएं चला सकती है जिन्हें स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है। इन्हें ताप लहरी हवाएं भी कहा जाता है। जिन्हें स्थानीय भाषा में लू के नाम से पुकारा जाता है। लू के कारण कभी-कभी लोगों कि मृत्यु तक हो जाती है। ग्रीष्मऋतु का आगमन मार्च के बाद यहा का तापमान निरन्तर बढ़ने लगता है तथा हवाएं उत्तर-पश्चिमी से चलना प्रारम्भ हो जाती है और इन हवाओं की गति मई-जून में अत्यधिक रहती है। मई-जून में हवाओं का औसत वेग रहता है। ताप लहरी हवाओं के साथ-साथ धूल भरी हवाएं चलने लगती है। राजस्थान में धूलभरी हवाओं की सर्वाधिक संख्या गंगानगर में तथा सबसे कम झालावाड़ में तथा इस क्षेत्र में अक्टुम्बर तथा नवम्बर में हवाओं की गति मंद होती है तथा ये दोनों मैप शान्त दिनों वाले कहलाते है, नवम्बर के बाद में गुलाबी शर्दी का आगमन हो जाता है आगे चलकर दिसम्बर जनवरी में तापमान 0 डिग्री सेन्टीग्रेड हो जाता है तथा डुण्डलोद गांव का इस वर्षा का जनवरी महिने में 10 या 11 दिनांक को न्यूनतम तापमान 0.5 सेन्टीग्रेड अंकित किया गया, कभी-कभी तापमान के 0 डिग्री से कम हो जाने पर बर्फ जम जाती है।